कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, फरवरी 2024 | वर्ष 2, अंक 6, पृष्ठ 4

अयोध्या में भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन हुआ, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित प्रमुख हस्तियां शामिल हुईं, दिल्ली में भी हर्षोल्लास के साथ भगवान श्रीराम का स्वागत किया गया।

अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा, देश में उत्सव

श्रीराम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के मौके पर दिल्ली को सजाया गया, मंदिरों में श्रीराम की विभिन्न लीलाओं को दिखाया गया

अनुराग

नई दिल्ली। अयोध्या में 22 जनवरी को भगवान श्रीराम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई। अयोध्या के साथ दिल्ली में भी हर्षोल्लास से भगवान राम का स्वागत किया गया। दिल्ली को दुल्हन की तरह सजाया गया। लोगों ने उल्लास में लगभग एक सप्ताह तक दिल्ली में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया। बताया जाता है कि दिल्ली में इस तरह के लगभग तीन हजार कार्यक्रम आयोजित किए गए। जो लोग अयोध्या नहीं जा पाए उनके लिए हजार से ज्यादा मंदिरों और विभिन्न स्थानों पर एलईडी स्क्रीन लगाई गई, जिन पर अयोध्या के राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का लाइव प्रसारण किया गया।

नई दिल्ली नगर पालिका परिषद ने अयोध्या में श्रीराम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के मौके पर दिल्ली में अलग-अलग 10 प्रमुख स्थानों पर फूलों से बने मंदिर के बोर्ड लगाए। परिषद के उपाध्यक्ष सतीश उपाध्याय ने बताया कि खान मार्केट, बीकेएस मार्ग, कनॉट प्लेस, मंडी हाउस चौराहा, पीएम हाउस राउंड अबाउट, मालचा मार्ग बाजार, यशवंत प्लेस मार्केट, दिल्ली हाट, बिड़ला मंदिर आदि में आकर्षक फूलों से बने बोर्ड लगाए गए। उन्होंने कहा कि श्रीराम जन्मभूमि पर हो रही प्राण प्रतिष्ठा 500 वर्षों के बाद एक ऐतिहासिक घटना है। इसी उल्लास में अशोक विहार को तो हूबहू अयोध्या की तरह सजाया गया।

• विभिन्न जगहों पर एलईडी लगाकर प्राण प्रतिष्ठा का सजीव प्रसारण किया गया
• मंदिरों में भजन-कीर्तन सहित जगह-जगह भंडारों का आयोजन किया गया

मंदिरों में भगवान राम के जन्म से पांच साल तक की बाल लीलाओं का विभिन्न भाषाओं में प्रदर्शन किया गया। प्रसिद्ध बिड़ला मंदिर को 11 हजार दीयों, कनॉट प्लेस को सवा लाख दीयों तथा आठ हजार झालर से सजाया गया। भाजपा मंदिर प्रकोष्ठ अध्यक्ष करनैल सिंह के अनुसार झंडेवालन देवी मंदिर में पांच प्रवेश द्वार को सजाया गया। इसी के साथ सवा लाख दीये जलाए गए। कई जगह लोगों ने पटाखे छुड़ाकर खुशी का इजहार किया। बताया जाता है कि पटाखों के कारोबार में उछाल देखने को मिला। मंदिरों में भजन कीर्तन के आयोजन हुए। लोगों ने उसमें शिरकत की। पूजा-पाठ किया और भगवान श्रीराम का ध्यान किया।

शक्तिपीठ सिद्ध पीठ में सुंदरकांड का पाठ किया गया। अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा से लेकर दिल्ली में जगह-जगह हो रहे आयोजनों को लेकर दिल्ली पुलिस सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सतर्क रही। संवेदनशील इलाकों में ड्रोन से निगरानी रखी गई। अर्धसैनिक बल भी तैनात किए गए। दिन के साथ साथ रात में भी गश्त होती रही। होटल, गेस्ट हाउस, धर्मशाला और साइबर कैफे की जांच की गई। रेलवे स्टेशन की पार्किंग की जांच हुई। अंतरराष्ट्रीय बस अड्डे पर लोगों पर विशेष निगरानी की जाती रही।

प्राण प्रतिष्ठा के दिन विभिन्न जगहों पर भंडारों का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने शिरकत कर प्रसाद ग्रहण किया। आयोजन में शामिल लोग इलाके सहित वहां से गुजरने वाले लोगों से प्रसाद ग्रहण करने का आग्रह करते दिखे। गलियों में भगवान श्रीराम के जयघोष के नारे लगते रहे। सरकारी दफ्तरों में आधे दिन अवकाश रहा, जिससे लोग अपनी भावना के तहत प्राण प्रतिष्ठा का आनंद ले सकें। शहर का आवागमन सामान्य बना रहे, इसके लिए प्रशासन पूरी मुस्तैदी से लगा रहा।

एंकरिंग के लिए जरूरी है कौशल

सोनिका

नई दिल्ली। महाविद्यालय की अंदाज समिति की ओर से एंकरिंग वर्कशॉप का आयोजन सेमिनार कक्ष में किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के तौर पर दूरदर्शन की वरिष्ठ न्यूज एंकर साधना श्रीवास्तव रहीं। समिति की संयोजक प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार और महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता मौजूद रहे।

वर्कशॉप में विद्यार्थियों ने एंकर साधना श्रीवास्तव से अपने एंकरिंग कौशल को सुधारने के लिए कई प्रश्न पूछे। संवाद और प्रस्तुतीकरण में माहिर साधना श्रीवास्तव ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। साथ ही उन्होंने बताया कि कैसे सही उच्चारण, सरल और सहज भाषा एक व्यक्ति को सफल एंकर बनाने में योगदान देती हैं। विद्यार्थी इन बातों को सीखकर अपना कॅरिअर बना सकते हैं।

पाठक का अधिकार ही लेखक का कर्तव्य: ममता

संजीव राज

नई दिल्ली। इंडिया हैबिटेट सेंटर में 15 नवंबर को राजकमल प्रकाशन समूह की विचार बैठकी की मासिक शृंखला 'सभा' की चौथी कड़ी में 'पाठक के अधिकार' विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। इसमें मशहूर लेखक ममता कालिया, कार्टूनिस्ट राजेंद्र धोड़पकर, संपादक रवि सिंह, अनुवादक जितेन्द्र कुमार एवं आलोचक मृत्युंजय उपस्थित थे। पाठक लेखक से क्या चाहता है, इस प्रश्न के साथ सभा की शुरुवात हुई। लेखक ममता कालिया ने इस प्रश्न का जवाब देते हुए कहा कि पाठक का अधिकार ही लेखक का कर्तव्य होता है। उन्होंने कहा कि पाठक के पसंद का भी ध्यान लेखक को रखना चाहिए। पाठक को नजरंदाज करके कहानियां आगे नहीं बढ़तीं।

पाठक लेखक को नकार सकता है, जैसे प्रश्न के साथ जितेन्द्र कुमार ने कहा कि वर्तमान समय में हिंदी लिखने का कार्य सवर्ण एवं हिंदी पढ़ने का काम गांव के लोग कर रहे हैं। किताबों का चयन करना पाठकों का अधिकार है।

इस पर ममता कालिया ने सुझाव दिया कि अगर किताबें चित्रात्मक बनाई जाएं तो किताबें ज्यादा पढ़ी जाएंगी। उन्होंने यह भी कहा कि बड़े-बड़े लेखकों ने कभी साम्प्रदायिकता पर नहीं लिखा।

रवि सिंह ने पाठको के अधिकार पर कहा कि किताबों का चयन करना पाठकों का अधिकार है। इस पर कार्टूनिस्ट राजेन्द्र धोड़पकर ने कहा कि पाठकों को अपने अधिकार के बारे में नहीं पता होता। उन्होंने कहा कि जो साहित्य लोकप्रिय हो और अच्छा हो वह ज्यादा दिन लोगो के बीच में रहता है।

अंत में राजकमल प्रकाशन समूह की ओर से इस विचार बैठकी को सफल बनाने के लिए आभार प्रकट किया गया। साथ ही कहा कि भविष्य में ऐसे और कार्यक्रम आयोजित होते रहेंगे। सभी पाठकों से इस तरह की बैठकी में जुड़ने का आग्रह किया।

राजकमल प्रकाशन की ओर से आयोजित पाठकों के अधिकार विषय पर गोष्ठी में लेखकों ने लिया हिस्सा।

वंचित लोगों के लिए सामग्री एकत्र की

योगेश प्रताप

नई दिल्ली। दान करना एक निस्वार्थ कार्य है। यही कार्य करने की भावना से राष्ट्रीय बालिका दिवस के उपलक्ष्य में राम लाल आनंद महाविद्यालय के एनएसएस ने एक डोनेशन ड्राइव चलाया। यह आयोजन एनएसएस के प्रोग्राम ऑफीसर डॉ. अनुराग शर्मा के सहयोग से परिसर में संपन्न हुआ। इसका उद्देश्य था, जेजे कॉलोनी की संसाधनों से वंचित बालिकाओं के लिए कपड़े एवं सेनेटरी पैड मुहैया कराना। इससे पहले 22 व 23 जनवरी को महाविद्यालय में कलेक्शन ड्राइव आयोजित की गई थी, जिसमे अनेक विद्यार्थियों अपनी स्वेच्छा से दान दिया।

नेशनल सर्विस स्कीम ऐसे मौकों पर समाज कल्याण की मुहिम चलाता रहता है। इस तरह की पहल करना समाज के लिए आवश्यक है। इसमें सभी को भागीदारी करनी चाहिए।

कई आयाम सीखने को मिले

ईन्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' का संपादन करने की जिम्मेदारी जब हमें मिली तो मन में विचार आया कि किस तरह काम होगा। टाइपिंग किस तरह से होगी। टाइपिंग के बाद पेज डिजाइन के लिए क्वार्क एक्सप्रेस सॉफ्टवेयर पर काम किस तरह किया जाएगा। इन्हीं सवालों के साथ हमने 'कैम्पस कनेक्ट' के संपादन की जिम्मेदारी स्वीकारी। जिम्मेदारी लेने के साथ काम की शुरुआत भी कर दी। इस जिम्मेदारी को निभाते हुए ऐसा कुछ नहीं लगा जो किया नहीं जा सकता। मुझे इसमें मुख्य रूप से खबरों का संपादन करना और लेआउट खींचना अच्छा लगा। किसी भी न्यूज लेटर को बनाने के लिए पहली प्राथमिकता लेआउट को दी जाती है। मेरे लिए यह अनुभव अलग तरह का था।

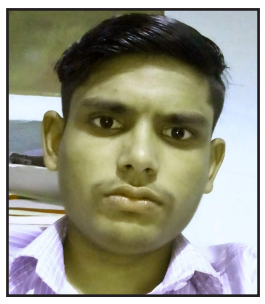

पवन कुमार

सबसे महत्वपूर्ण बात मैंने इस दौरान करीब से सीखी कि समय सीमा के अंतर्गत कार्य करना कितना जरूरी है। इस काम को करने के बाद मुझे यकीन है कि यदि मुझे भविष्य में क्वार्क एक्सप्रेस सॉफ्टवेयर पर कार्य करने का मौका मिला तो मैं अच्छे से काम कर पाऊंगा। 'कैम्पस कनेक्ट' हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का एक महत्वपूर्ण कदम है। इसकी सहायता से विद्यार्थियों को पत्रकारिता के कई आयाम सीखने को मिल रहे हैं। न्यूज लेटर बनाने के दौरान सहयोग करने वाले अपने शिक्षक और साथियों का मैं तहेदिल से आभारी हूं।

कथाकार संजीव को साहित्य अकादमी पुरस्कार

संजीव के लेखन के केन्द्र में रहा है हाशिए का समाज, 'मुझे पहचानो' के लिए मिलेगा सम्मान

मीनाक्षी पंत

नई दिल्ली। हिंदी के जाने–माने कथाकार संजीव को इस साल का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिलेगा। यह पुरस्कार साहित्य की दुनिया में सबसे बड़ा सम्मान माना जाता है। साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने साहित्य अकादमी भवन में साल 2023 के साहित्य अकादमी पुरस्कार के विजेताओं की घोषणा की। साहित्य अकादमी ने उपन्यास श्रेणी में हिंदी के लिए संजीव, अंग्रेजी के लिए नीलम शरण गौर और उर्दू के लिए सादिक नवाब सहर को पुरस्कार के लिए चुना है। अकादमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने बताया कि अकादमी ने नौ कविता संग्रह, छह उपन्यास, पांच कहानी संग्रह, तीन निबंध तथा एक आलोचना की पुस्तक को पुरस्कार के लिए चुना है।

संजीव ने अपनी लेखनी के माध्यम से हिंदी साहित्य की जनवादी धारा के कथाकार के रूप में अपनी छवि बनाई है। उन्होंने हमेशा अपनी रचना उन विषयों पर केंद्रित रखी, जिन्हें मुख्यधारा ने नकारा। वह कहानी एवं उपन्यास दोनों ही विधाओं में लिखी गई अपनी रचनाओं के लिए जाने जाते हैं।

पिछले दिनों साहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक की अध्यक्षता में हुई कार्यकारी मंडल की बैठक में के. श्रीनिवास राव ने अपने वक्तव्य में बताया कि हिंदी भाषा के क्षेत्र में लोकप्रिय रचनाकार संजीव को उनके उपन्यास 'मुझे पहचानो' के लिए मार्च 2024 में साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया जाएगा। संजीव ऐसे कथाकार हैं, जिनका हिंदी कथा साहित्य में विपुल योगदान है। समकालीन भारत में हाशिए के समाज की शायद ही कोई बड़ी समस्या हो, जिस पर संजीव ने काम न किया हो। पिछले वर्षों में किसानों की समस्याओं पर उनका महत्वपूर्ण उपन्यास 'फांस' प्रकाशित हुआ तो हिंदी समाज सहित अनेक भाषाओं में उसे रेखांकित किया गया। आज भी उस बहस–मुबाहिसा होता रहता है।

संजीव को साहित्य अकादमी सम्मान दिए जाने से देश भर में फैले उनके प्रशंसकों में खुशी की लहर दौड़ गई और फेसबुक पर उन्हें ढेरों लोगों ने बधाइयां और शुभकामनाएं दी हैं। लोगों का मानना है कि उन्हें यह सम्मान बहुत पहले ही मिल जाना चाहिए था। उनके विपुल रचना संसार को देखते हुए साहित्य अक. ादमी सम्मान एक तरह की भूल सुधार है, उन्हें कथाक्रम सम्मान, अन्तरराष्ट्रीय इंदु शर्मा सम्मान, भिखारी ठाकुर सम्मान, पहल सम्मान, सुधा स्मृति सम्मान, श्रीलाल शुक्ल स्मृति साहित्य सम्मान मिल चुके हैं। संजीव कई वर्ष 'हंस' पत्रिका के कार्यकारी संपादक भी रहे।

रासायनिक खाद का कम प्रयोग कर मृदा को बना सकते हैं स्वस्थ

सर जैव उर्वरक या बायो फर्टिलाइजर क्या है और क्या इन्हें और नाम से भी जाना जाता है?

जैव उर्वरक जिनको बायो फर्टिलाइजर के नाम से जाना जाता है, वर्तमान समय में खेती में अधिक से अधिक रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग हो रहा है। साथ ही रासायनिक कीटनाशकों का भी अधिक प्रयोग हो रहा है, जिससे हमारी मिट्टी प्रदूषित होती जा रही है। बायो फर्टिलाइजर एक ऐसा जीवित जीव है जो पौधों के साथ मिलकर पौधों को मिट्टी में उपस्थित पोषक तत्वों की उपलब्धता को सुनिश्चित करते हैं ! वायुमंडल में जो नाइट्रोजन है उसे वायुमंडलीय नाइट्रोजन को जैव उर्वरक फिक्स करके पौधों को नाइट्रोजन उपलब्ध कराते हैं तो इनको हम दूसरी भाषा में कह सकते हैं जैव उर्वरक एक जीवाणु खाद है। जैव उर्वरक जीवित उर्वरक हैं, जिनके अंदर सूक्ष्म जीव विद्यमान होते हैं। यह हमारी मिट्टी की उर्वरा शक्ति को टिकाऊ बनाए रखते हैं। साथ ही हमारी फसल की पैदावार को बढ़ाते हैं।

हम यह जानना चाहेंगे कि भारत में इनकी शुरुआत कब से हुई और उनका कामर्शियल प्रोडक्शन कब से शुरू हुआ?

भारत में जैव उर्वरकों के उत्पादन की कोई जानकारी नहीं है, लेकिन पूरे विश्व में जैव उर्वरकों की शुरुआत 1885 में हुई थी। भारत में इसका जो प्रचार प्रसार हुआ वह यहां के वैज्ञानिक एनसी जोशी जिन्होंने सर्वप्रथम कामर्शियल प्रोडक्शन 1956 में हुआ और भारत सरकार और कृषि मंत्रालय ने भी नौवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान जैव उर्वरकों के उपयोग और विकास पर एक राष्ट्रीय परियोजना चलाई, जिसके माध्यम से भारत के किसानों को जैव उर्वरकों की जागरुकता के बारे में बताया गया 1956 से राइजोबियम कल्चर की शुरुआत हुई थी।

हम यह जानना चाहेंगे कि जैव उर्वरक के कितने प्रकार हैं और उनकी प्रकृति क्या–क्या है?

जैव उर्वरकों को फसलों के आधार पर बांटा गया है। जैसे कि नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाले उर्वरकों की मैं बात करूं राइजोबियम कल्चर का इस्तेमाल दलहनी फसलों में किया जाता है जबकि धान्य फसलों में अजीटोबैक्टेरियम। जैसे धान जो पानी पर खड़ा रहता है कुछ ऐसे माइक्रो राजा बायो फर्टिलाइजर भी बाजार में आ गए, जिनकी वजह से काफी फसलों को नाइट्रोजन के साथ–साथ फास्फोरस की उपलब्धता भी समय–समय पर कराते हैं और हमारी मिट्टी की जो उर्वरा शक्ति है वह बराबर बनी रहती हैं।

मिट्टी की उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में जो हमारे जैव उर्वरक हैं, बायो फर्टिलाइजर से उनका क्या महत्व है?

रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करने से उत्पादन बढ़ता है, लेकिन अगर हम रासायनिक उर्वरकों का ज्यादा मात्रा में प्रयोग करेंगे तो इसका दुष्प्रभाव भी हमारी मृदा पर पड़ता है। इसको ध्यान रखने के लिए रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कम करके बायो फर्टिलाइजर के प्रयोग को बढ़ाएं। इससे हमारी मिट्टी की उर्वरा शक्ति बनी रहे और इसका विपरीत प्रभाव कम पड़े। जैव उर्वरक वायुमंडल नाइट्रोजन से सीधे जुड़े हुए हैं। यह वातावरण में उपस्थित नाइट्रोजन को अपनी जड़ों में संरक्षित करते हैं और पौधे को नाइट्रोजन उपलब्ध कराते हैं। जैव उर्वरकों में 30 से 40 किलो प्रति हेक्टेयर नाइट्रोजन पड़ती है। जैव उर्वरक वायुमंडल से फिक्स करके हमारी फसलों को देते हैं। अगर मैं फास्फोरस की बात करूं तो फास्फोरस की उपलब्धता भी 20 से 30 प्रतिशत हमारी फसलों को बढ़ा देते हैं जो घुलनशील प्रकृति के फास्फोरस होते हैं। उसको घुलनशील बनाकर पौधों को देते हैं, जिससे हमारी लागत कम हो।

डीसीएम श्रीराम केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स के सीनियर एग्रोनॉमिस्ट *डॉ. कैलाश चंद नेहरा* पिछले दिनों राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के मेहमान थे। इस दौरान *खुशी वशिष्ठ* ने जैव उर्वरकता पर उनका साक्षात्कार लिया। उस साक्षात्कार के कुछ अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए यहां पेश हैं...

इसके और क्या लाभ हो सकते हैं जो हमारे किसान भाइयों को मिल सकते हैं। क्या आप उस पर थोड़ा प्रकाश डालना चाहेंगे?

यह रासायनिक उर्वरकों से काफी सस्ते मिलते हैं, जिससे हमारी उत्पादन की लागत कम होती है। साथ ही जैव उर्वरकों के प्रयोग से जो हमारी नाइट्रोजन, फास्फोरस है उसकी उपलब्धता फसलों को बढ़ा देती है क्योंकि बहुत सारी ऐसी नाइट्रोजन और फास्फोरस हैं जिसे हम लगातार फसलों में डालते आ रहे हैं। रासायनिक वह खाद है जिनको फसलें पूरी तरह ग्रहण नहीं कर पाती हैं। दूसरा रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग ज्यादा करने से हमारी मिट्टी की संरचना खराब होती है, जो मैंने पहले भी आपसे बताया था। तो हम लोग जैसे जैव उर्वरकों का मृदा में प्रयोग ज्यादा करेंगे तो हमारी मृदा की जो संरचना है उसमें पानी को ग्रहण करने की क्षमता बढ़ेगी।

जैव उर्वरक की भारत में वर्तमान में क्या स्थिति है और भविष्य में इसकी क्या संभावनाएं हैं?

बायो फर्टिलाइजर का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और बायो फर्टिलाइजर ऐसे सहजीवी जीवाणु होते हैं जो पौधों की वानस्पतिक वृद्धि करते हैं। 200 ग्राम वाले पैकेट में 25 जीवाणु कार्ड बायो फर्टिलाइजर के पैकेट की आवश्यकता पड़ती है। अगर 25 पैकेट हैं, अगर 50 किलो मिट्टी में या सड़ी गली गोबर की खाद या कंपोस्ट है उसमें इनको मिक्स कर लें तो यह 25 पैकेट का एवरेज 5 किलो वर्क बनेगा। इसको आप गोबर में अच्छे से मिला लें। उसके बाद अपने खेत में इसको फैला दें। इस प्रक्रिया से हमारी मिट्टी को बायो फर्टिलाइजर से उपचारित कर सकते हैं। इन तीन विधियों से आप लोग भी उपचार कर सकते हैं। उसकी जड़ का उपचार कर सकते हैं और मृदा का उपचार कर सकते हैं। इन तरीकों से हम बायो फर्टिलाइजर को खेती में डाल सकते हैं और उनका लाभ ले सकते हैं।

हम जैविक खाद का प्रयोग किस प्रकार कर सकते हैं–बीज उपचार से, जड़ उपचार से या मृदा उपचार से। तो हमें यह कैसे पता चलेगा कि कौन सी फसल में हमें कौन सा उपचार करना है और किस जैव उर्वरक का प्रयोग किस फसल में करना है। फसलों के आधार पर कौन कौन से जैव उर्वरक प्रयोग किए जाते हैं, किस फसल के लिए कौन सा जैव उर्वरक हमें प्रयोग करना चाहिए?

वर्तमान समय में अनेक जैव उर्वरक उपलब्ध हैं लेकिन हमें यह देखना है कि हमने कौन से खेत में कौन सी फसल लगा रखी है और मैं उसका उपचार करने जा रहा हूं तो आपके लिए कैटेगरी वाइज वर्क बनाए हुए हैं, फसलों के आधार पर जितनी भी डालनी है। जिसके अंदर आपकी दलहनी फसले आती हैं। उसमें राइजोबियम कल्चर से हम उपचारित करें, उसका जो बीज के लिए 200 ग्राम कल्चर है राइजोबियम 10 से 15 किलोग्राम के लिए उपलब्ध रहेगी। इसी तरीके से जितनी भी सीरियल क्रॉप है, इसका भी बीज उपचार के माध्यम से कर सकते हैं। मृदा उपचार कर सकते हैं। जड़ उपचार के माध्यम से आप देख सकते हैं। इसकी क्वांटिटी वही है कि आपको 200 ग्राम 10 से 15 किलो बीज के हिसाब से लगाना है।

अगर हेक्टेयर की मैं बात करूं तो 5 किलो प्रति हेक्टेयर के रूप से आप इसका प्रयोग कर सकते हो। इसको बीज के साथ डाल सकते हैं। बोने की जो विधि है उसके आधार पर आप बुवाई कर सकते हैं या बुवाई करने के बाद आप उसको अप्लाई कर सकते हैं। जड़ के अंदर या मिट्टी जब तैयार कर रहे हो उसमें मिट्टी में गोबर के साथ मिलाकर भी इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। उसकी भी दोस्त वही है। उसकी 5 किलो आप प्रति हेक्टेयर के हिसाब से इसका इस्तेमाल करना है।

साथ ही कुछ ऐसे माइक्रो रिजोल बायो फर्टिलाइजर भी आ रहे हैं बाजार में, उनका भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। इनका बीज उपचार कर सकते हैं। आप लोग इनका सेट रूट ट्रीटमेंट कर सकते हैं या सॉइल में सीधा एप्लीकेशन कर सकते हैं। खड़ी फसल में भी आप इनका इस्तेमाल कर सकते हैं। आपको 2 से 5 किलो प्रति एकड़ के हिसाब से इसका इस्तेमाल करना है। माइक्रो राजा हमारी जड़ों के अंदर जाकर अपनी सहजीवी कॉलोनी बना लेता है, जिससे साथ में रूट ग्रोथ होती है।

रूट के बढ़वार के साथ–साथ वायुमंडल में जो नाइट्रोजन होती है, जो मिट्टी के अंदर एक घुलनशील फास्फोरस होती है जो पौधों को नहीं मिलती है, वह भी यह घोल के पौधे को उपलब्ध कराता है, जिससे पौधे की वनस्पति बढ़वार अच्छी होती है। पौधे के अंदर हरापन ज्यादा आता है और पौधे के अंदर कई ऐसे बायोटिक स्ट्रेस हैं उनके ऊपर भी इसका असर नहीं होता, क्योंकि माइक्रो राजा पौधे की जड़ों का विकास अधिक करता है। जड़ें ज्यादा गहरी हो जाती हैं। अगर कुछ दिनों तक पौधे को पानी भी 5 दिन 4 दिन लेट मिलता है तो भी फसल उसमें तंदुरुस्त बनी रहेगी। ऐसे में यह माइक्रो राजा बायो फर्टिलाइजर आया है।

यह बहुत ही महत्वपूर्ण जैव उर्वरक है, जो मैं सभी किसान भाइयों को यह सलाह देना चाहूंगा कि माइक्रो राजा बायो फर्टिलाइजर आप ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करें और रासायनिक उर्वरकों को आप थोड़ा काम कर दें, जिससे कि आपकी लागत भी कम होगी। साथ ही आपको फसल अच्छा उत्पादन देगी। इसी के साथ यह भी है कि जो आपका मिट्टी का स्वास्थ्य है वह भी अच्छा बना रहेगा। उनसे जो उत्पाद बनता है यानी जो प्रोड्यूस आएगा वह भी आपको काफी हद तक पेस्टी. साइड मुक्त होगा।

जैव उर्वरकों का प्रयोग करते समय हमें क्या–क्या सावधानियां बरतनी चाहिए?

वास्तव में किसान भाइयों को यह ध्यान रखना चाहिए कि जो जैव उर्वरक बाजार में आ रहे हैं उनको हमें किस तरह से इस्तेमाल करना है लेकिन इसके साथ भी आपको बहुत सारे कार्य ऐसे हैं जिनको ध्यान रखने की जरूरत है। जब आप बाजार से कल्चर या बायो फर्टिलाइजर लेकर आ रहे हैं तो उसका रखरखाव किस तरह से करना चाहिए। जिससे कि इसके अंदर जो जीवित जीवाणु होते हैं वह उसमें खत्म न हों। ऐसे में फ्रेंडली एनवायरनमेंट होना चाहिए। दूसरा मैं यह कहना चाहूंगा कि जब आप खरीद करते हैं तो उसकी एक्सपायरी डेट जरूर चेक करें। कई बार एक्सपायरी डेट नहीं चेक करते हैं। ऐसे में अनेक बार छह महीने से पुराना अगर हम इस्तेमाल कर रहे हैं तो उसके अंदर जीवाणुओं की संख्या कम हो जाती है और वह जितना हम लोग उम्मीद कर रहे थे उसके हिसाब से लाभ नहीं होगा।

तीसरा है कि कई बार हम लोग इस्तेमाल करते हैं तो रासायनिक खाद के साथ मिला कर देते हैं। रासायनिक कीटनाशकों के साथ मिलाकर जैव उर्वरक का इस्तेमाल करते हैं तो यह नहीं करना चाहिए। इनको यह जीवित जीवाणु होते हैं जैव उर्वरक अगर इनको किसी भी रसायन के साथ मिलाएंगे तो इनकी काम करने की क्षमता कम हो जाएगी। इनकी संख्या कम हो जाएगी और जो हमें फायदा मिलना चाहिए वह पूरा नहीं मिल पाता है। इससे हमारी फसल अच्छीं नहीं होगी, जिसके कारण हमारे किसानों को नुकसान उठाना पड़ता है। ऐसे में इस बात का बहुत ध्यान रखना होता है कि उसका नियमानुसार इस्तेमाल होना चाहिए।

शिक्षा का अभियान, अध्ययन सामग्री का दान

खुशी चौहान

नई दिल्ली । राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी विभाग की हिंदी साहित्य परिषद ने महाविद्यालय में अध्ययन सामग्री दान करने का अभियान शुरू किया। अभियान का उद्देश्य जेजे कॉलोनी, मोती बाग स्लम एरिया में जरूरतमंद बच्चों को अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना था। यह अभियान परिषद की संयोजिका प्रो. श्रुति आनंद और विभाग की प्रभारी प्रो. अर्चना गौड़ के नेतृत्व में चलाया गया।

सामग्री दान अभियान महाविद्यालय के फ्रंट लॉन में 10 से 12 बजे तक हुआ। कैंप में 10–15 छात्र–छात्राओं के साथ कुछ शिक्षिकाओं ने भी शामिल होकर इस आयोजन को सफल बनाया। इस डोनेशन कैंप का मुख्य उद्देश्य था कि जो बच्चे आर्थिक स्थिति ठीक न हो पाने के कारण पढ़ने लिखने से वंचित रह जाते हैं। उनके लिए कुछ प्रयास करना चाहिए। जहां महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने अभियान को सफल बनाने के लिए अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। जिसके लिए उन्होंने किताबें, बोतल, पेन, पेंसिल ज्योमेट्री बॉक्स इत्यादि देकर अपना योगदान दिया। अभियान को सफल बनाने में महाविद्यालय के विद्यार्थियों के अलावा महाविद्यालय के अध्यापकों का भी योगदान रहा।

रामलाल आनंद महाविद्यालय में बच्चों ने जुटाई अध्ययन सामग्री।

अभियान में मिली अध्ययन सामग्री को परिषद की ओर से जेजे कॉलोनी में जरूरतमंद बच्चों को बांटा गया। इस डोनेशन कैंप का मुख्य उद्देश्य था कि जो बच्चे आर्थिक स्थिति ठीक न हो पाने के कारण पढ़ने से वंचित रह जाते हैं। उनके लिए कुछ सहायता प्रदान कर मानवता का धर्म निभाना चाहिए। इस दान के आयोजन में पहले कॉलेज के सभी छात्रों से पुरानी और नई वस्तुएं इकट्ठा की। इसके बाद उन वस्तुओं को स्लम एरिया में जाकर बच्चों को वितरित किया गया। इस अवसर पर शिक्षकों का सुझाव रहा कि इस तरह के आयोजन समय समय पर होते रहने चाहिए। ऐसा करने से वह बच्चे भी पढ़ सकेंगे, जो कभी संसाधनों की कमी के कारण पीछे रह जाते हैं। महाविद्यालय के विद्यार्थियों के इस प्रयास को बस्ती के लोगों ने सराहा। उन्होंने कहा कि अगर इसी तरह से समाज के लोग अपनी जिम्मेदारी समझ लें तो सभी बच्चे पढ़–लिख जाएंगे।

ट्वेल्थ फेल : संघर्ष और लगन से मिलती है सफलता

खुशी शाक्या

नई दिल्ली। संघर्ष, ईमानदारी और लगन से मिलती है सफलता। कभी हार न मानना उस सफलता को पाने की चाभी होती है। ऐसी ही लगन, संघर्ष और ईमानदारी को दर्शाती है फिल्म ट्वेल्थ फेल। फिल्म एक सच्ची घटना पर आधारित है, जिसमें आईपीएस मनोज कुमार शर्मा और डिप्टी कलेक्टर श्रद्धा की कहानी को दर्शाया गया है।

इस फिल्म की कहानी मनोज कुमार के इर्द–गिर्द घूमती है, जो डीएसपी दुष्यंत से मिलने के बाद ईमानदारी के रास्ते को चुनता है। यह रास्ता उसके लिए आसान नहीं था। जिस मनोज कुमार को यूपीएससी का यू भी नहीं पता था। उसने अपने आखिरी अटेम्प्ट में यूपीएससी क्लियर करके लोगों को गलत साबित किया और अपनी एक पहचान बनाई। मनोज प्रयास करते रहे और अंत में श्रद्धा, प्रीतम पांडे और गौरी भैया जैसे लोगों की तरह किस्मत ने भी उनका साथ दिया। मनोज कुमार शर्मा की इस लगन को शायद राम लाल आनंद कॉलेज के फुले पेरियार अंबेडकर स्टडी सर्किल ने भी पहचाना। फिल्म को विद्यार्थियों को दिखाने का निर्णय लिया ताकि वे भी मनोज के संघर्ष से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ सकें। फिल्म कॉलेज के एमफी थिएटर में 2 फरवरी को दिखाई गई। फिल्म देखने के बाद सभी विद्यार्थियों ने अपना फीडबैक साझा किया।

चित्रा मुद्गल ने लेखन को समृद्ध करने के टिप्स दिए

आयुष प्रजापति

नई दिल्ली । पच्चीस रुपए महीने के किराए की खोली में रहकर और मजदूर यूनियन के लिए काम करते हुए कठिन मार्ग के विकल्प को अपनाने वाली वरिष्ठ लेखिका और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित चित्रा मुद्गल का 80वां जन्म दिवस मनाया गया। लब्ध प्रतिष्ठित कथाकार के जन्मोत्सव के साथ उनकी पुस्तक शून्य पर परिचर्चा व सम्मान समारोह भी आयोजित किया गया।

चित्रा मुद्गल साहित्य अकादमी, व्यास सम्मान जैसे अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित हिंदी की कालजयी रचनाकार हैं। उनका चर्चित उपन्यास पोस्ट बॉक्स नंबर 2023–नालासोपोरा है। इसके अति. रिक्त एक जमीन अपनी, आवां, गिलीगड्डू आदि कृतियां हैं। समारोह में चित्रा मुद्गल ने अपनी पुस्तक शून्य पर संक्षिप्त चर्चा की।

इस दौरान उन्होंने बताया कि कैसे वर्तमान में लेखन कार्य को और समृद्ध करें? इसमें और क्या परिवर्तन करना चाहिए? ऐसे अनेक बिन्दुओं पर बात करते हुए लेखिका ने कहा कि वही रचनाएं चर्चित होती हैं अथवा पढ़ी जाती हैं, जिनका समाज से सरोकार होता है। समाज से सीधा जुड़ाव होता है। पढ़ने वाले को लगे कि यह तो उसकी अथवा उसके आ. सपास की ही बात है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, कलानिधि विभाग एवं रेस्पेक्ट इंडिया के तत्वावधान में आयोजित समारोह में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम का समापन पर चित्रा मुद्गल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

महिला मुद्दों पर काम करना चाहिए

खुशी वशिष्ठ

नई दिल्ली । समाजवाद का अर्थ विभिन्न जातियों, ऊंच–नीच और अमीर–गरीब सहित समाज के सभी वर्गों के बीच की गैरबराबरी को मिटाना है। सुरेंद्र मोहन की स्मृति में 'वर्तमान में राजनीतिक परिदृश्य में समाजवादियों की भूमिका' विषयक व्याख्यान में मुख्य वक्ता रमाशंकर सिंह ने कहा कि महिलाओं की स्थिति में कोई बड़ा बदलाव नहीं आया है। इस पर समाजवादियों को विचार करके कार्य करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में जेनेरिक दवाइयो को अधिक से अधिक उपयोग में लाने का प्रयास किया जाना चाहिए, जिससे इस आम जन बड़े पैमाने पर लाभ उठा सके। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता हरभजन सिंह सिद्धू ने की। साकेत में 17 अक. टूबर को आयोजित समारोह में बड़ी संख्या में लोगों ने शिरकत की।

कला परिषद ने लिए नाट्य समारोह के लिए आवेदन

अंशिका

नई दिल्ली । कला का सीधा संबंध हृदय से होता है, जिसके बीच की महत्त्वपूर्ण कड़ी होता है कलाकार। रंगमंच कर्मियों की नाट्य कला को उभारने और पहचान दिलाने के लिए साहित्य कला परिषद् दिल्ली ने नाट्य समारोह के लिए आवेदन निकाले हैं। उत्सव के लिए नाटकों का चयन गठित समिति की ओर से नाट्य कर्मियों के साक्षात्कार से संपन्न होगा।

आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 14 दिसंबर 2023 थी। इसे साहित्य कला परिषद् के स्थाई पते पर जमा अथवा उनके ईमेल पर भी भेजा जा सकता था। परिषद् रंग उत्सव का आयोजन करेगी। इसके लिए साक्षात्कार 15 दिसंबर 2023 को किए गए। इसके लिए नाट्य मंचन सीमा 90 मिनट की होगी। इच्छुक व्यक्तियों व नाट्य निर्देशकों के लिए कोई आयु सीमा तय नहीं की गई है। दूसरा है–भरतमुनि रंग उत्सव। यह एक–दो पात्रीय नाटको का समारोह होगा। इसमें नाट्य मंचन सिर्फ 35 मिनट के होंगे। यह भी पूर्णकालिक होंगे। बिना किसी आयु सीमा के लोग 16 दिसंबर 2023 को साक्षात्कार के लिए उपलब्ध हुए।

इसी क्रम में युवा नाट्य समारोह, जोकि युवा नाट्य निर्देशकों के नाटकों का उत्सव है। इसके लिए साक्षात्कार 17 दिसंबर को आयोजित किए गए। साथ ही परिषद् की ओर से जारी निर्देश के अनुसार प्रस्तावित नाटक का मंच पर निर्देशन हो और नाटक का कथानक किसी धर्म, जाति अथवा व्यक्ति विशेष को ठेस न पहुंचाए। इसके साथ ही इसमें यह भी नियम था कि जो लोग गत वर्षों में भाग ले चुके हैं वे इसमें आवेदन. नहीं कर सकते थे।

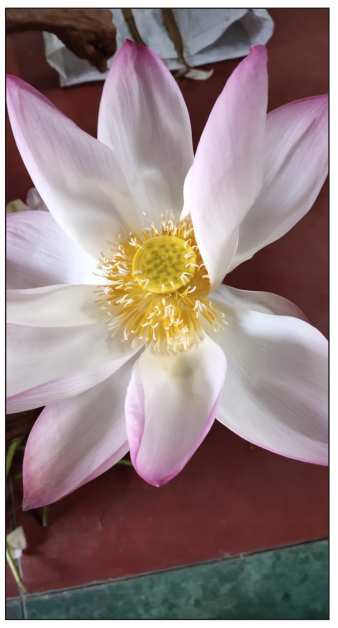

दिल्ली विश्वविद्यालय की पुष्प प्रदर्शनी में फिर इठलाएंगे फूल

पुष्पेंद्र

नई दिल्ली । दिल्ली में 1 मार्च को फिर एक स्थल अपनी हवा में महक बिखेरेगा। एक स्थान पर तरह–तरह के फूल देखने को मिलेंगे। प्रत्येक वर्ष की तरह इस बार फिर 66वीं वार्षिक पुष्प प्रदर्शनी का आयोजन दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से किया जा रहा है। इस बार की थीम स्त्री और प्राकृतिक संवर्धनः सहकारिता एवं शाश्वत विकास का उत्सव रखी गई है। पुष्प प्रदर्शनी विश्वविद्यालय के नार्थ कैंपस में गौतम बुद्ध शताब्दी उद्यान में आयोजित की जाएगी। यह प्रदर्शनी भव्य और आकर्षक होने वाली है। इसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के सभी महाविद्यालय हिस्सा लेंगे। तरह–तरह के प्रतियोगताएं भी आयोजित की जाएंगी।

वर्तमान में रेडियो की भाषा का स्वरूप

मीनाक्षी त्रिपाठी

नई दिल्ली । हिंदी साहित्य उत्सव का आयोजन ऑक्सफोर्ड बुक स्टोर ने 17 दिसंबर 2023 को करवाया, जो 11 बजे से शाम आठ बजे तक हुआ। इसमें मुख्य रूप से आठ विषयों पर वार्ता की गई इसमें कई ऐसे विषय भी रहे जो महिला और मीडिया से सीधे जुड़े हुए थे।

लेखक रविकांत इस अवसर पर बताते हैं कि वर्तमान समय में रेडियो की भाषा बदल गई है। रेडियो ने जिस तरह भाषा का विकास किया है वह यह भूल चुका है कि भाषा के विकास में शब्दों का चुनाव करना जरूरी है, जिससे भाषा में आक्रामकता नहीं आती है। जिस तरह लोगों के बीच में रेडियो ने अपनी जगह बनाई है उस पर समाचार देने में भी रेडियो पीछे छूट गया है। इस कारण रेडियो समाचार बाजार नहीं बन पाया। जिस तरह निजी रेडियो राजनीति से जुड़े हुए कार्यक्रम प्रदान कर सकता है, लेकिन सामुदायिक रेडियो पर कुछ ऐसे प्रतिबंध होते हैं जिनको सामुदायिक रेडियो को मानना जरूरी हो जाता है। किस तरह रेडियो ने अपनी भाषा पर काम किया, 2014 के चुनाव में रेडियो ने किस तरह की भूमिका निभाई थी, इस पर भी बात की।

लाल किले में लगे नौ दिवसीय भारत पर्व मेले में देश के कोने कोने से घूमने आए लोग और विभिन्न राज्यों की संस्कृति से हुए परिचित।

भारत पर्व में देश की संस्कृति के अनेक रंग दिखे

पुष्पेंद्र

नई दिल्ली। संस्कृति कितनी महत्वपूर्ण है, आज के जीवन के लिए। लोग अपने भोग–विलास के लिए यह भी नहीं देखते कि हमारे क्रियाकलापों से हमारे आसपास के लोगों को कोई नुकसान तो नहीं हो रहा। आखिर हम संस्कृति को क्यों पढ़ रहे हैं, आज कौन सी नौबत आई कि हमें संस्कृति को पढ़ना पढ़ रहा है। कोई पहलू तो होगा जिससे हम बिछड़ रहे हैं। कोई तो स्थिति होगी जिसको हमने नजरंदाज किया है। आज संस्कृति को पढ़ने का मुख्य कारण है कि हम महफूज रास्ते से भटककर कंक्रीट से भरे रास्ते पर चलने लगे हैं। हम अपनी संस्कृति को त्याग कर पाश्चात्य देशों की ओर भाग रहे हैं। हम खाना अपनी संस्कृति का नहीं खा रहे हैं। हम पहन–ओढ़ अपनी संस्कृति का नहीं रहे हैं।

हमारा पूरा देश पाश्चात्य संस्कृति की ओर अपना रुख बना चुका है। क्या विकासशील होने का तात्पर्य अपनी संस्कृति को भूल जाना है? इसी उपलक्ष्य में अपनी संस्कृति से रूबरू कराने के लिए लाल किले के मैदान में समस्त देश की संस्कृति से लोगों को रूबरू कराया गया।

यहां हिमाचल की टोपी, पंजाब का भंगड़ा, राजस्थान का झूमर और कठपुतली नृत्य आदि देखने को मिला। भारत पर्व मेले में संस्कृति को महत्ता दी गई। विभिन्न राज्यों की खान–पान संस्कृति को भी जानने का अवसर मिला। मेले में जाकर लगा कि हम प्रकृति के कितने करीब थे। और आज हम प्रकृति से कितने दूर जा चुके हैं।

भारत पर्व मेले में देश के सभी राज्यों ने अपनी संस्कृति का बखान किया। किसी ने अपने लोकनृत्य को प्रस्तुत किया। तो किसी ने अखाड़े में कुश्ती दिखाकर अपनी कला को प्रस्तुत किया। लोकगीत भी जमीन की वास्तविक स्थिति बताते नजर आए। विभिन्न राज्यों के गायकों ने अपनी गायकी से लोगों के दिल जीते। मेले में वह तमाम पहलू दिखाए गए, जो लोग भूलते जा रहे हैं। बांस के बर्तन लाभप्रद होते हैं। विभिन्न राज्यों का अपना सांस्कृतिक भोजन होता है। कई चीज बिल्कुल ऑर्गेनिक होती हैं। सभी खाने में प्रयोग होने वाली चीजें ऑर्गेनिक एवं हाथ से बनी हुई थीं। मेले में गणतंत्र दिवस की परेड में शामिल सभी राज्यों की मनमोहक झांकियां भी सजाई गईं। झांकियों के के जरिए वहां के कृषि क्षेत्र को दिखाया गया। किसी झांकी में विज्ञान को बताया गया। किसी में संस्कृति को तो किसी में विकसित भारत को दिखाने का प्रयास किया गया।

इन झांकियों में जी–20 का भारत मंडपम प्रस्तुत किया गया था। इसी के साथ चंद्रयान 3 को प्रस्तुत किया गया और महापुरुषों के चित्र भी बनाए गए। इस मेले का आयोजन 23 जनवरी से 31 जनवरी तक किया गया। मेले में पूरे भारत को लाल किले के मैदान में साक्षात देखा जा सकता था। यहां विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का स्वाद लिया जा सकता था। मसाले और आचार के चटकारे का अपना मजा है। इसमें अधिकांश स्वदेशी और हाथ से बनी थीं, जिसका यहां पहुंचे लोगों ने आनंद उठाया।

आकाश नायर को जेसी बोस मेमोरियल मेडल

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने आकाश नायर को सम्मानित किया।

आयुष प्रजापति

नई दिल्ली । आकाश नायर वर्तमान में अल्बर्टा विश्वविद्यालय कनाडा से भूभौतिकी विषय से पीएचडी कर रहे हैं। आकाश राम लाल आनंद महाविद्यालय में भूविज्ञान विषय से बीएससी कर चुके हैं। शैक्षणिक यात्रा के दौरान आकाश उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए पहचाने गए हैं। बीएससी (ऑनर्स) भूविज्ञान में उनके बेहतर प्रदर्शन के लिए विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक और एमएससी में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से प्रोफेसर जे.सी. बोस मेमोरियल गोल्ड मेडल प्राप्त करना शामिल है।

आकाआईआईटी खड़गपुर में इंस्टीट्यूट सिल्वर मेडल, कीर्तन बी. बेहरा सर्वश्रेष्ठ ऑलराउंडर पुरस्कार से भी सम्मानित हैं। आकाश के काम में व्यापक साहित्य सर्वेक्षण, डेटा विश्लेषण और एक वैज्ञानिक पेपर का सह–लेखन शामिल है। अपनी शैक्षणिक गतिविधियों से परे आकाश ने एसईजी आईआईटी खड़गपुर छात्र चैप्टर और राम लाल आनंद कॉलेज में जियोलॉजिकल सोसायटी के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के रूप में बेहतर काम किया है। उन्हें पर्यावरण, सार्वजनिक भाषण, लेखन, हिप–हॉप संगीत और बैडमिंटन का शौक है।

आरएलए का गौरव

एक उत्कृष्ट छात्र होने के अलावा आकाश एक प्रतिभाशाली शिक्षक भी हैं। उनके पास जटिल अवधारणाओं को आसान तरीके से समझाने की प्रतिभा है। अपने ज्ञान और विशेषज्ञता को दूसरों के साथ साझा करने की उनकी इच्छा उनकी उदारता और सहयोगात्मक भावना का प्रमाण है। शैक्षणिक उत्कृष्टता, तकनीकी विशेषज्ञता और शिक्षण क्षमता का संयोजन उन्हें किसी भी अवसर के लिए एक अच्छा इंसान बनाता है। आकाश की इस उपलब्धि के लिए उनके साथियों और शिक्षकों ने बधाई दी है।

विद्यार्थी तरक्की करेंगे तो समाज तरक्की करेगा

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय में 25 जनवरी को देश के कई राज्यों की संस्कृति के रंग देखने को मिले। गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में 'कला प्रवाह' नामक हुए समारोह में विद्यार्थियों ने अपनी प्रस्तुति से उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, पंजाब सहित दक्षिणी राज्यों की लोक संस्कृति से परिचित कराया। समारोह के तहत ही कविता पाठ, गायन और नृत्य प्रतियोगिताओं में भी बच्चों का हुनर देखने को मिला। देश प्रेम की कविताओं और प्रस्तुतियों ने लोगों में जोश भरने का काम किया। इसी दौरान प्राचार्य और एनसीसी अधिकारी के संबोधनों ने देश प्रेम और कर्तव्य बोध का संदेश दिया। गणतंत्र दिवस के परिप्रेक्ष्य में प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने कहा कि यह ऐसा राष्ट्रीय पर्व है जो भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का उद्घोष करता है। सेनाओं का पराकर्म देखने को मिलता है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि कोई काम ऐसा न करें, जिससे देश को नुकसान पहुंचे। यही संकल्प हमें लेना चाहिए। कॉलेज में एनसीसी का कैडेट रहा चिराग शर्मा गणतंत्र दिवस की परेड का नेतृत्व करेगा। इससे कॉलेज और शिक्षकों को गर्व की अनुभूति होती है। विद्यार्थी तरक्की करते हैं तो संस्था का नाम ऊंचाइयों पर पहुंचता है।

• विद्यार्थी विचार साझा करें कि 2047 तक भारत कैसे विकसित बने : प्राचार्य

• राम लाल आनंद कॉलेज में गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में समारोह

प्राचार्य ने कहा कि सरकार युवाओं से उनके विचार मांग रही है कि 2047 तक भारत को विकसित भारत कैसे बनाएं। आप अपने विचार संबंधित पोर्टल पर जाकर अवश्य साझा करें। मेजर प्रो. संजय कुमार शर्मा ने राम प्रसाद बिस्मिल को उद्धृत करते हुए झंडारोहण समारोह की शुरुआत कर विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों को सराहा। उन्होंने कहा कि युवाओं के विचार सुनकर आज मन प्रसन्न हो गया। आप इन भावों के साथ काम करेंगे तो निश्चित रूप से देश मजबूत होगा। महाविद्यालय का नाम रोशन होगा। समाज उन्नति की दिशा में बढ़ेगा। इसी कड़ी में राष्ट्रीय मतदाता दिवस के उपलक्ष्य में लोगों को मतदान करने, लोकतंत्र को मजबूत करने की दिशा में काम करने के लिए शपथ दिलाई गई। अंत में आर्ट एंड कल्चर सोसाइटी की संयोजिका प्रो. मुक्ता मजूमदार ने धन्यवाद किया तो आयोजन को सफल बनाने वाले विद्यार्थियों, सोसाइटी आदि सभी को प्रोत्साहित किया। संचालन आस्था त्रिपाठी, तपलब्धा, खुशी वशिष्ठ ने किया। इस मौके पर उपप्राचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र डबास, प्रो. प्रदीप शर्मा सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी मौजूद रहे।

इससे पहले एम्फीथिएटर में सुबह कविता पाठ, गायन और नृत्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कविता पाठ में प्रियांशु कुमार ने प्रथम स्थान पर कब्जा जमाया तो दूसरा स्थान खुशी वशिष्ठ का रहा। तीसरे स्थान पर निकिता पठानिया रहीं। इसी तरह गायन में अरविन्द गोपाल झा ने मनमोहक गजल से पहला स्थान हासिल किया। दूसरे नंबर पर हेमन्त कुमार तो तीसरे पर यश द्विवेदी रहे। नृत्य में अक्षिता उनियाल, पलक श्रेष्ठा और श्रेया ने बाजी मारी। विद्यार्थियों के कविता पाठ के बीच शिक्षिका डॉ. रियंका और डॉ. प्रदीप कुमार ने भी अपनी कविताओं का पाठ कर लोगों की तालियां बटोरी।

महिला किक बॉक्सिंग में शिवानी को पहला स्थान

अपने कोच के निर्देशन में शिवानी गुप्ता ने यह सफलता अर्जित की।

लक्ष्मी

नई दिल्ली । रामजस इंटरनेशनल स्कूल आरके पुरम में आयोजित महिला युवा किक बॉक्सिंग प्रतियोगिता में दिल्ली एनसीआर में से 150 युवा महिलाओं ने अपनी भागीदारी जताई। इसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार की तृतीय वर्ष की छात्रा शिवानी गुप्ता ने मार्शल आर्ट में प्रथम स्थान अपने नाम किया। इसके लिए शिवानी को मेडल देकर सम्मानित किया गया। इस मेडल के लिए शिवानी ने कई प्रयास किए। कई तरह की कठिनाइयों का सामना कर मेडल तक पहुंचने का रास्ता खुद बनाया।

आरएलए का गौरव

महिला किक बॉक्सिंग प्रतियोगिता में न सिर्फ महत्ता दिखाने का काम किया गया बल्कि किंक बॉक्सिंग में महिलाओं की नींव को और मजबूत करने का कार्य भी किया गया। इस

• शिवानी गुप्ता को कई तरह की कठिनाइयों से गुजर कर मिली है सफलता

• संगीत के साथ लड़कियां मार्शल आर्ट का कर रही हैं प्रदर्शन

प्रतियोगिता में किक बॉक्सिंग के अलावा हमें म्यूजिकल फॉर्म भी देखने को मिला। इसमें संगीत के साथ महिलाएं अपने मार्शल आर्ट का प्रदर्शन करती हैं। यह महिला सशक्तीकरण को दर्शाती है। प्रतियोगिता के अंत में विजेताओं को मेडल के जरिए सम्मानित किया जाता है। सभी ऑफिशियल रेफरी और जजों को मोमेंटो देकर आभार व्यक्त किया गया। सफल आयोजन के पीछे एक सबसे बड़ा हाथ हमारे निष्पक्ष ऑफिशियल रेफरी और जज का भी था। शिवानी की इस उपलब्धि से उनके अभिभावक खुश हैं। उन्हें इसी तरह आगे बढ़ने की शुभकामनाएं दे रहे हैं।

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में झंडारोहण समारोह (बाएं), स्पर्धाओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया (दाएं)।

सांस्कृतिक परिवर्तन विषय पर दो दिवसीय सेमिनार

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय का इतिहास विभाग एक दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन कर रहा है। सेमिनार का विषय 'सांस्कृतिक परिवर्तन : उपमहाद्वीपीय अनुभव' रखा गया है। यह सेमिनार 1 और 2 मार्च को महाविद्यालय परिसर में होगा। उद्घाटन सत्र होने के बाद इसके विभिन्न सत्र होंगे, जिसमें देश और विदेश के अनेक शोधार्थी अपने शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे।

सरलता से बढ़ता है भाषा का महत्व

सोनिका

नई दिल्ली। हिंदी भाषा को देश के अधिकतर लोग रोजमर्रा की बातचीत करने के लिए इस्तेमाल करते हैं। हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया, इसलिए उसकी महत्ता ज्यादा बढ़ जाती है। हिंदी की इसी महत्ता को समझने के लिए राम लाल आनंद महाविद्यालय की हिंदी रचनात्मक समिति अभिव्यक्ति ने एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें बतौर मुख्य अतिथि भारतीय जनसंचार संस्थान के भाषा अध्यक्ष अंकुर विजयवर्गीय मौजूद रहे। साथ ही समिति के संयोजक डॉ मानवेश नाथ दास उपस्थित रहे।

शुरुआत में संयोजक डॉ मानवेश नाथ दास ने मुख्य अतिथि को पौधा भेंट कर उनका स्वागत किया। अंकुर विजयवर्गीय ने बताया कि किस तरह देश की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता आम जन में रचनात्मकता को जन्म देती है। कैसे एक व्यक्ति उस रचनात्मकता को भाषा की महत्ता और उसकी उपयोगिता बढ़ाने में इस्तेमाल कर सकता है। उन्होंने यह भी बताया कि हिंदी की शुद्धता बनाए रखने के लिए हमें रचनात्मकता की ओर जाना चाहिए। कठिन शब्दों से बचना चाहिए। सरल शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए। ऐसा करने से वर्तमान पीढ़ी के अंदर हिंदी भाषा के प्रति जो हीन भावना है उसे खत्म किया जा सकेगा।

अभिव्यक्ति समिति की ओर से आयोजित की गई इस कार्यशाला में विद्यार्थियों ने भाषा संबंधी कई नए पहलुओं को जाना। साथ ही हिंदी के विकास में आने वाले उतार चढ़ाव को भी समझा। अंत में प्रश्न उत्तर सत्र रखा गया, जिसमें छात्र और छात्राओं ने अतिथि से बढ़–चढ़कर सवाल रखे, जिसका उन्होंने जवाब दिया। प्रश्न उत्तर सत्र के बाद समिति की अध्यक्षा अविशी खुराना ने मुख्य अतिथि और समिति के संयोजक का आभार व्यक्त किया।

संरक्षक मंडल

प्राचार्य

प्रो. राकेश कुमार गुप्ता

विभागाध्यक्ष

प्रो. राकेश कुमार

परामर्शदाता

डॉ. अटल तिवारी

संपादक

पवन कुमार

उप–संपादक

पुष्पेन्द्र अहिरवार